"समसामयिक संदर्भों को रेखांकित करता 'कुमार अम्बुज' का कविता संग्रह "उपशीर्षक"

वंचितों एवं शोषितों की मूक पीड़ा को स्वर देने वाले भारत भूषण अग्रवाल आदि अनेकानेक प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित चर्चित कवि कुमार अंबुज के अब तक अनेक कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं..जिनमें किवाड़ **(1992),** क्रूरता**(1996),**अनंतिम**(1998),**अतिक्रमण**(2002),**अमीरी रेखा**(2011)**एवं कविताओं का चयन कवि ने कहा **(2012)**आदि पर्याप्त ख्याति लब्ध कविता संग्रह हैं..अपनी कविताओं के माध्यम से सदैव ही परंपरागत तथा रूढ़ वैचारिक सोच से मुक्ति दिलाने का एवं नवीन तर्काश्रित सोच की ओर आम जनमानस का ध्यान उन्होंने इंगित करने का प्रयास किया है. जड़ मान्यताओं अथवा परंपराओं के नाम पर व्यवहृत हो रहे समाज पर सदैव प्रतिरोध अथवा नकार का अंकुश उनकी कविताओं द्वारा समय-समय पर लगाया जाता रहा है और यह प्रतिरोध ही इनकी कविताओं की मुख्य विशेषता बन पड़ा है..इन्हें नकार है समाज की खोखली, जड़गत रीतियों से तथा इन्हें स्वीकार्य है, विवेकपूर्ण,संवेदनायुक्त तथा प्रेम की उष्मा से दिपदिपाता हुआ जीवन.. वस्तुतः वर्तमान मनुष्य के जीवन संघर्षों को ही उन्होंने अपनी कविताओं का मुख्य कथ्य बनाया है.साधारण मनुष्य के दुखों से उपजी सांवेदिकता उनकी कविताओं को और अधिक मर्मस्पर्शी बना देती है.यह कवि अपनी कविताओं में ऐसे समाज को अभिव्यक्त कर रहा है जो एक संवेदनहीन तथा कष्ट पूर्ण माहौल में जीने के लिए विवश है तथा जो अंदर ही अंदर घुट घुट कर भी अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं. आम जन जीवन में घटने वाली छोटी से छोटी तथा बड़ी से बड़ी हर बात का सम्यक रेखांकन हमें उनकी कविताओं में बखूबी देखने को मिलता है. कुछ ऐसा ही दैनिक जीवन की तमाम विसंगतियों से उपजा,आज के यथार्थ को चित्रित करता,'कुमार अंबुज' का सद्यः प्रकाशित एक उत्कृष्ट काव्य संग्रह 'उपशीर्षक' **(2022)** राधाकृष्ण प्रकाशन से प्रकाशित होकर पाठकों के मध्य खूब चर्चित रहा है. इस संग्रह में जहां एक और सामान्य मनुष्य की चिंताएं हैं वहीं दूसरी ओर उन सत्ताधारियों की अमानवीय या अमानुषिक क्रियाओं का भी स्पष्ट अंकन है जो सामान्य मनुष्य को दुख एवं पीड़ा के गर्त में धकेल रही हैं.इस प्रकार कहा जा सकता है कि उपरोक्त काव्य संग्रह अपने बहुआयामी दृष्टिकोण से संपन्न संग्रह है.**82** कविताओं से युक्त यह काव्य संग्रह निम्न मध्यमवर्गीय मनुष्य के जीवनानुभवों का वेदनापूर्ण दस्तावेज है,जो संवेदनशील पाठकों को सोचने पर विवश कर देता है अथवा उसकी आत्मा को झकझोर कर रख देता है. जैसा कि कवि उपरोक्त संग्रह के अपने समर्पण में ही उद्धृत करता है-

'मेरा काम है कि मैं आपको सुनने,कुछ महसूस करने और सबसे ज्यादा कुछ देखने के लिए तैयार कर सकूं!बस यही,और यही सब कुछ है!'-जोसेफ कोनराड

जैसा कि हमें ज्ञात होता है कि इस संग्रह की कविताएं एक गहन मानवीयता बोध तथा नैतिक चेतना से समृद्ध है..वस्तुतः यह कविताएं संवेदित पाठक वर्ग से प्रश्न करती सी प्रतीत होती है जो कि कवि की गहरी सूझ-बूझ और व्यापक अंतर्दृष्टि की ओर संकेत करती है.शासन तंत्र की प्रत्येक गतिविधि जिसका सीधा प्रभाव आम जन जीवन पर पड़ता है,उसका सम्यक् पड़ताल इस संग्रह की कविताएं करती हैं..मुख्यतः यह कविताएं आम जनमानस को उद्वेलित करती हैं अन्याय के विरुद्ध उठ खड़ा होने को तथा अपने एवं सबके लिए न्याय की बात करने को.. वर्तमान स्थिति परिस्थिति का पूर्ण अंकन ही इस संग्रह की मुख्य विशेषता रहा है..

'उपशीर्षक' काव्य संग्रह की 'शीर्षक उपशीर्षक' कविता के माध्यम से इसी वर्तमान परिदृश्य की बयानगी कुमार अंबुज जी इस प्रकार से करते हैं-

" इतना राष्ट्रवाद है कि किसी से क्षमा-याचना नहीं की जा सकती
इस प्रदूषण में साफ हवा बची है केवल चैंबर ऑव कॉमर्स में
उड़ती हुई धूल ने नष्ट कर दी है धूप की प्रसन्नता
एक मुट्ठी मृदा परीक्षण में मिला है छह किसानों का रक्त
आक्रामक चापलूसी को मीडिया ने बना दिया है प्रतियोगिता
यह नैतिकता है जो परेशान करती है और क्रोध दिलाती है"**1**

कवि का स्पष्ट रेखांकन है उस स्थिति विशेष का,जिसमें कि तथाकथित राष्ट्रवाद के नाम पर आज जो घोर अव्यवस्था हो रही है,उस से क्या-क्या प्रभावित हो रहा है आम जनजीवन से लेकर किसान तक..और ऐसी इस

स्थिति में मीडिया की कोई उचित भूमिका दृष्टिगत नहीं होती है..अव्यवस्था और असंतुलन की उड़ती हुई धूल ने सामान्य मनुष्य के जीवन जीने की स्वाभाविक गति को ही धूसरित कर दिया है केवल अथवा एकमात्र अपनी नैतिकता के आश्रित होकर ही कवि अपना प्रतिरोध दर्ज करा रहा है.. वर्तमान व्यवस्था के सम्यक् चित्रण के साथ साथ यह कविता तमाम विद्रूपताओं से उपजी कवि की खीझ को भी स्पष्ट रूप से प्रकट करती है.. आज के समाज में चारों ओर से निरीह मनुष्यता किस प्रकार से छली जा रही है राष्ट्रवाद के नाम पर,उसका उत्कृष्ट उदाहरण उपरोक्त कविता है..

इसी क्रम में'एक अधूरी कहानी'शीर्षक कविता में मुख्यधारा के तथाकथित समाज द्वारा हाशिए पर धकेल दिए गए शोषित एवं वंचित मानव समाज का चित्रण इस प्रकार से है-

"आखिर कहां है इनकी ज़मीन,कितना है इनका रक़बा
क्या ये इस घर में,इस पेड़ के नीचे,इस नदी किनारे
इस तलहटी में जीवन-भर रह सकते हैं
या तुम्हारे द्वारा खींच दिए घेरे के बाहर
एक क़दम भी रख देंगे तो हो जाएंगे निर्वासित

× × × × × × × × × × × × × × × × × × × ×

विस्थापन ने,अनिश्चितता ने इन्हें पूरी तरह बदल दिया है अब इनमें से इनका कुछ भी पुराना बरामद नहीं किया जा सकता

× ×

अपनी जगह से उजड़े निष्कासित आदमी को
आप किसी भी नाम से पुकारें,वह चौंककर
इस तरह देखेगा जैसे वही उसका नाम रहा हो
और जब उससे कभी कोई दुलार से कहता है कि आओ, यह मेरा घर है लेकिन इसे तुम अपना ही समझो
तो याद आता है: हां,उसका अब कोई घर नहीं है"2

एक प्रकार से यह कवि की सर्वाधिक मार्मिक कविता बन पड़ती है क्योंकि यह समाज से धीरे धीरे पृथक किए जा रहे विस्थापित समुदाय की आवाज है,जो अभिशप्त हुआ है अपनी ही जड़ों से अलग होकर जीवन जीने को..इसी वंचित समाज की त्रासदी को यह कविता पूरी संवेदना के साथ अभिव्यक्त करती है.. प्रथम दृष्टया इस कविता में कवि समाज के हुक्मरानों से सवाल करता है की अपने हकों से वंचित मानव समुदाय का अपना क्या है? इनकी जमीन,इनकी होकर भी क्या इनकी है?अथवा अपने प्राकृतिक परिवेश में प्रकृति के साहचर्य में उन्हें जीवन भर रहने का अधिकार प्राप्त है.. इस प्रकार इस कविता में कवि सीधे एवं कड़े शब्दों में अपनी पूर्ण पक्षधरता के साथ मनुष्यता के पक्ष में खड़ा दिखाई देता है.. अपने साथ होने वाले इस अन्याय का अथवा विस्थापन का इस समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है इसकी भी पूर्ण अभिव्यक्ति यह कविता करती है..वस्तुतः अपनी जड़ों से पृथक यह जन समाज अपनी स्वाभाविकता में नहीं रहने पाता,वह पूरी तरह परिवर्तित हो जाता है वह अपने चारों ओर के समाज में उस अपनेपन की तलाश करता है जिससे उससे कम से कम मनुष्य समझा जाए.. उपरोक्त कविता के शीर्षक की अर्थवत्ता इसी बात में निहित है कि यह शोषित समाज अपने जीवन की इन तमाम त्रासदियों को अपनी आने वाली पीढ़ी को एक अधूरी कहानी की तरह सुनाता है, तथा वह पूर्ण आशावान हो उठता है कि शिक्षा और संघर्ष के बल पर उसका आने वाला समाज उसकी अधूरी कहानी को एक दिन अवश्य पूर्ण करेगा अर्थात उसके साथ पूर्णतया न्याय होगा..

इसी संग्रह की एक अन्य कविता 'प्रवासी पक्षी' में अपनी संवेदना को विस्तृत करते हुए वह एक रूपक बांधते हैं.यहां प्रवासी पक्षी से उनका स्पष्ट तात्पर्य है अपनी पहचान के लिए संघर्षरत प्रवासी मनुष्य से,जो बेहतर आजीविका की खोज में अपने परिवेश से विलग है तथा जीवनगत एवं जीविकागत दुरूहताओं से विवश होकर अपने परिवेश से वापस से मिलने की तीव्र इच्छा से संपृक्त है..इसी का मार्मिक उद्घाटन इस कविता में हुआ है-

"हर आदमी के पास अपना एक जर्जर जहाज होता है जिस पर वह वापस लौटता है बार-बार
वह जहाज़ अगर नहीं है उसके जीवन में
तो वह होता है उसके स्वप्न में
किसी पेंटिंग,किसी कविता में

इच्छाओं में,मरीचिका में,स्मृति के आंचल में"3
अपने घर से अपने समाज से अपने परिवेश से दूर,सुदूर देश में रहता हुआ मध्यमवर्गीय मनुष्य अपने समाज में लौट आने की छटपटाहट से युक्त होता है,इसी की संवेदनात्मक काव्यात्मक अभिव्यक्ति कवि के द्वारा उक्त कविता में की गई है.. वस्तुतः यह भी समाज का एक प्रमुख पक्ष है की बेहतर से बेहतर की ओर जाता हुआ मनुष्य भी अपनी प्राचीनतम जड़ों की ओर लौटने के लिए कितना आकुल व्याकुल हो उठता है..यह भी कवि से अछूता नहीं है,यह कविता इसी बात का स्पष्ट संकेत है…
यांत्रिकता के दुष्चक्र में फंसे समाज में,सभी एक दूसरे से परस्पर कितना कटते जा रहे हैं जिसके परिणाम स्वरूप निरीह बुजुर्ग समाज कितना अकेला होता जा रहा है इसका ही एक शब्द बिंब उकेरती है इसी काव्य संग्रह की"एक सर्द शाम'(एक बुज़ुर्ग के साथ समय बिताने के बाद) शीर्षक कविता-
"गुरुत्वाकर्षण है सुनसान के इस विवर में
सब कुछ खिचंता चला जाता है ब्लैक-होल में
यह कुछ इस तरह होता है
कि अंदाजा नहीं लग पाता
एक दिन इस कदर अकेले रह जाएंगे
अकेले रह जाना कोई चुनाव या इच्छा नहीं
बस आप अकेले हो जाते हैं
जैसे किसी नियति की तरह
यह समाज ही ऐसा हो गया है
कि पेश आने लगता है नियति की तरह"4
जितनी तकनीकों और संसाधनों का विकास व विस्तार हमारे समाज में हो रहा है उतना ही हमारे बुजुर्ग अकेले रहने को अभिशप्त होते जा रहे हैं..इस कविता के माध्यम से कवि ने समाज की इस अकेली होती जा रही मानवता की ओर ध्यान इंगित कराया है.. इस कविता के माध्यम से कवि स्पष्ट करना चाहता है कि व्यस्ततम समय के बावजूद भी हमें हमारे बुजुर्गों को भी पर्याप्त समय देना आना चाहिए.. इनके अकेलेपन को भी बांटना हमारा नैतिक उत्तरदायित्व है..
वस्तुतः उपशीर्षक काव्य संग्रह की कविताएं कहीं-कहीं पर लंबी हैं तथा कुछ कविताएं संक्षिप्त एवं छोटी..लेकिन यह कविताएं अपनी साफगोई एवं स्पष्ट बयानगी के कारण पाठक वर्ग को बांधे रखती हैं और एक सतर्क एवं जागरूक दृष्टिकोण के साथ प्रेरित करती है कि वह अपने चारों ओर के समाज को विवेक पूर्ण दृष्टि से देखें,समझे और महसूस करें यही इन कविताओं की मुख्य उपादेयता है..
यह समाज स्त्री एवं पुरुष दोनों के सह अस्तित्व से अस्तित्व मान है.ऐसे में केवल पुरुष वर्ग ही श्रेष्ठ है,यह सोच एवं तर्क निराधार है..सदियों से पीड़ित एवं प्रताड़ित की जाती रही स्त्री की वर्तमान परिदृश्य में भी स्थिति बहुत अधिक परिवर्तित नहीं हुई है इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है इसी संग्रह की 'धरती का विलाप' शीर्षक कविता में-
" दुख उठाने के लिए स्त्रियां ही बची रह जाती हैं
मानों उनका यही जीवन चक्र है:सुख देना,दुख सहना और नए दुखों की राह तकना
× ×
विस्थापन की मुसीबत में नदी भी एक दिन
आदमियों,मकानों और पेड़ों को घेर लेती है
लेकिन बाढ़ में घिरी एक अकेली स्त्री
किसी दूसरी ज़मीन पर जाने से इंकार कर देती है
डूबते घर के सेहन में बैठकर
निष्कंप देखती है गूंगा हाहाकार और मृत्यु
वह जानती है कि नौकाएँ भी दुखों को
इस पार से महज़ उस पार ही लेकर जा सकती हैं"5

उक्त कविता के माध्यम से हम समझ सकते हैं कि कवि की सूक्ष्म विश्लेषणपरक क्षमता अभूतपूर्व है.उसने समाज के प्रत्येक वर्ग,प्रत्येक घटना,प्रत्येक क्रिया-व्यापार, प्रत्येक मनोभाव को अपने काव्य संग्रह उपशीर्षक का विषय बनाया है..

आज जब समाज में चारों तरफ अन्याय एवं अत्याचार का बोलबाला है ऐसे में जब न्याय संगत अथवा न्याय पूर्ण तरीके से कोई भी कार्य संपादित नहीं किए जा रहे हैं तो अपने हक के लिए अपनी आवाज को उठाने के लिए इसी काव्य संग्रह की 'यदि तुम नहीं मांगोगे न्याय' शीर्षक कविता के माध्यम से मध्यम वर्गीय समाज के प्रत्येक मनुष्य को संबोधित करते हुए कवि कहता है कि-

" जैसे कि न्याय-
जो बार-बार मांगने से ही मिल पाता है थोड़ा-बहुत
और ना मांगने से कुछ नहीं,सिर्फ अन्याय मिलता है आफ़त यह है कि यदि तुम नहीं मांगोगे
तो वह समर्थ आदमी अपने लिए मांगेगा न्याय
और तब सब मज़लूमों पर होगा ही अन्याय"6

यहां पर कवि की पूर्ण संवेदना हर उस मनुष्य के साथ है जो उचित न्याय की आस में अपने दुखों से दो-चार हो रहा है.ऐसे में कवि हर उस मनुष्य की आत्मा को झिंझोड़कर अपने हक में न्याय मांगने के लिए उद्वेलित करता है जो भय एवं संकोच में अपनी बात नहीं कह पाता..

वर्तमान परिदृश्य में तेजी से विकास की ओर बढ़ते हुए आज जो हमारे परिवार व समाज की आधारशिला माने जाते थे वह मीठे रागात्मक संबंध नगण्य होते जा रहे हैं.किसी समय में हमारे संबंध ही हमारी पूंजी हुआ करते थे आज किस तरह वे क्षरित हुए हैं,इस ओर भी कवि का ध्यान इस संग्रह की 'संबंध' शीर्षक कविता के माध्यम से गया है-

" उनका भी एक आयुष्य होता है
कुछ दुर्घटनाओं में अकाल मौत मर जाते हैं
या उन्हें जकड़ लेती है विकलांगता
अनेक मूर्छा में चले जाते हैं और कातर आंखों से
अपने भीतर झांक कर देखते रहते हैं कोई चलचित्र
कुछ गिर जाते हैं लालसा की खाई में
कई सहन नहीं कर पाते दुर्दिन"7

इस प्रकार यह एक यथार्थपरक अभिव्यक्ति है कि किस प्रकार से प्रेम की आत्मीय ऊष्मा हमारे बीच से विलुप्त होती जा रही है जो संबंधों के ठंडेपन का सूचक है.तेजी से परिवर्तित दौर की आपाधापी के बीच यह कविता कितनी सहजता से हमारा ध्यान आकर्षित करती है अपने संबंधों को सहेजने की ओर.. वस्तुतः आगे पहुंचने की होड़,स्वयं को श्रेष्ठ समझने की मानसिकता,अहंमन्यता आदि कुछ ऐसी ही मनोवृत्तियां हैं जो धीरे-धीरे हमारे संबंधों को खाती जा रही हैं..इस प्रकार से इस संकलन की कविताएं समाज के प्रत्येक छोटे बड़े बदलावों को पूरी सहृदयता के साथ व्यक्त करती है.

मुख्यतः यथार्थपरक प्रतिबिंबन ही इस संकलन की कविताओं का केंद्रीय तत्व रहा है. आम नागरिक के पक्ष में खड़ा हुआ यह कवि एक संवेदनशील कवि है जो समाज में चारों तरफ हो रहे अत्याचार को हमारे सामने रखता है इसी संकलन की अपनी लंबी कविता 'शोक सभा' शीर्षक के माध्यम से-

" पिटता हुआ आदमी चीखता है मैं नागरिक हूं
मुझे मेरे अधिकार दो,प्रताड़क करता है अट्टहास
कोई नहीं है यहां नागरिक,तुम एक धर्म हो,जाति हो,
प्रांत हो,तुम एक भाषा हो,केंद्रशासित हो,क़र्फ्यूग्रस्त हो
दरअसल तुम एक फटी हुई जेब हो"8

यहां पर दम तोड़ती मनुष्यता का अत्यंत मर्मस्पर्शी चित्रण है, कि किस प्रकार से कट्टर समाज द्वारा मनुष्यता को ठेस पहुंचाई जा रही है.उसे केवल एक मनुष्य न मानकर धर्म, जाति,प्रांत,भाषा में विभाजित किया जा रहा है,यह विभाजन ही मानवता पर अत्याचार का कारण है. आज के समय- सन्दर्भों में इन्हीं वर्गों में विभाजित समाज अपनी एकता व अखंडता को बनाए रखने में प्रयासरत है.

आपाधापी भरे माहौल में आज एक जागृत एवं सतर्क कवि की भूमिका तिरोहित सी हो गई है.वस्तुतः कविता ही वह साधन है जो हमें अपनी तमाम जीवनगत एवं परिवेशगत विषमताओं से साक्षात्कृत कराती है तथा एक बेहतर दशा एवं दिशा की ओर उन्मुख करती है.ऐसे में एक कवि ही है,जो ना सत्ता के दबाव से आक्रांत होता है और ना ही स्वार्थपरता की जकड़बन्दियों में बंधा होता है वरन् वह तो अपनी कोमल संवेदनाएं अपनी कविता के द्वारा,ऐसे समाज को समर्पित करता है जो निराशा एवं अत्याचार के गह्वर में गिरा पड़ा है ऐसे में कवि का आत्माभिमान अथवा स्वाभिमान बचा रहे यह अत्यावश्यक है. इसी संग्रह की "कवि की अकड़"(अपनी राह चलने वाले कुछ कवियों के बारे में सोचते हुए) शीर्षक कविता में दृष्टिगत होता है कि-

" कि वही तो है जो बिल्कुल ठीक अकड़ता है
कि वही तो है जिसके पास कोई अध्यादेश लाने की ताक़त नहीं
वर्दी नहीं,कुर्सी नहीं,मौके-बेमौक़े के लिए लाठी तक नहीं
फिर भी एक वही है जो बता रहा है बेखौफ़
कि अकड़ना चाहिए कवियों को भी
इसे इस तरह भी कह सकते हैं
वह कविता की बची-खुची अकड़ है
जीवन पर निर्बल की सच्ची पकड़ है!"9

वस्तुतः आज के परिवेश के कवियों का एवं उनकी भूमिका का स्पष्ट एवं तथ्यपरक चित्रण हमें उक्त कविता में देखने को मिलता है.

इसी संग्रह की 'रोटी,कंबल और पैरासिटामॉल'शीर्षक कविता में अपने बुनियादी हकों के लिए आवाज उठाती,निर्मम सत्ता से प्रतिवाद करती निरीह मनुष्यता का चित्रण इस प्रकार देखने को मिलता है-

" कई बार रखी गई मांगों को फिर रखता हूं
कि दो वक्त की चाय और तीन वक्त की रोटी चाहिए
दो जोड़ी कपड़े और रोशनीवाला हवादार कमरा चाहिए
× ×
अनगिन मुश्किलें हो गई हैं चारों तरफ़
देशव्यापी वीरताओं की नृशंसताओं से पटे हुए हैं अख़बार
मुझे सिर दर्द है,दुख रहा है बदन,चढ़ आया है बुखार
इस हालत में मुझ नागरिक को
किसी का वक्तव्य नहीं चाहिए,
पैरासिटामॉल चाहिए!"10

आम आदमी के पक्ष में खड़ी इनकी जनपक्षधरता इस संग्रह की कविताओं के प्रत्येक कोण से झांकती से प्रतीत होती है.काव्य के धरातल पर समाज का निर्मम चेहरा सहानुभूति के साथ-साथ पूरी तल्खी के साथ उकेरती है. वस्तुतः यह कविता लोकतांत्रिक देश में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का हक मांग रही है,वह ज्यादा कुछ नहीं अपितु केवल अपनी बुनियादी अथवा जमीनी स्तर की जरूरतों को पूरा करने का अधिकार मांग रही है अर्थात इस अर्थ में यह कविता लोकतांत्रिक देश की सबसे बड़ी समस्या की ओर हमारा ध्यान केंद्रित करती है जहां जीने के लिए मनुष्य को जरूरी चीजें भी उपलब्ध नहीं हो पा रही अगर उन्हें कुछ मिलता है तो केवल वोट के नाम पर लंबे-लंबे भाषण अथवा झूठे वादे..

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि देशव्यापी तमाम अमानवीय अथवा अमानुषिक क्रियाओं के बीच पिसते आम आदमी की पुकार को,एक संवेदनशील कवि किस प्रकार सटीक एवं तल्ख लहजे में रेखांकित कर सकता है इसका सीधा उदाहरण है कुमार अंबुज का यह कविता संग्रह उपशीर्षक..इस संग्रह के माध्यम से कवि ने आम मनुष्य की छोटी से छोटी जरूरतों के प्रति अपनी बात बेबाकी से रखी है..वस्तुतः इस संग्रह की कविताएं पीड़ा के प्रत्येक स्तर को पहचानती हैं तथा उनमें व्यक्त मार्मिक क्षणों को अभिव्यक्त करती हैं,यही इन कविताओं की मुख्य विशेषता है..आज के परिदृश्य में यह कविताएं प्रतिरोध है,प्रतिवाद हैं,समाज से,सत्ता से तथा स्वयं से,वही दूसरे अर्थों में यह कविताएं पूरी तरह से संपृक्त है अपने परिवेश के प्रति,संबद्ध है मानवीय सरोकारों के प्रति तथा प्रतिबद्ध है मनुष्यता के संरक्षण हेतु..

संदर्भ-ग्रंथ सूची-

1-'उपशीर्षक'**-** कुमार अंबुज,राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली, प्रथम संस्करण**-2022,**पृष्ठ संख्या**-17**

2-वही,पृष्ठ संख्या**-18-19-20**

3-वही,पृष्ठ संख्या**-76**

4-वही,पृष्ठ संख्या**-81**

5-वही,पृष्ठ संख्या**-12**

6-वही,पृष्ठ संख्या**-26**

7-वही,पृष्ठ संख्या**-62**

8-वही,पृष्ठ संख्या**-132**

9-वही,पृष्ठ संख्या**-28-29**

10-वही,पृष्ठ संख्या**-22**